

[illegible]

गीतसचोठधनरवनिडा॥धुल्लूखायालायायायाडाअथलोक
 कायाधनसकायधनसनकपालसमित्तकसूर्यधनवनापन
 यदालल्लिदंआयूदयिडास्वर्गमधपागालसडाअरुयिडादवद
 वदर्शनलायिडादवीदर्शनलाडास्वर्गायरुयिडा॥प्रिभुवनवस्यया
 यरुयिडा॥दवयाकप्रसादला००डाधनधन्यादयिडासिद्धिप्रसादता
 ००डासत्यसत्यवचनध॥धयाइगधयाकाणवृताडाविथनियस
 वृत्ताकवस्यशूशूधवाइगधयाकाणवृत्तयाहधकाणवृत्तन

सासगस्यै न के न का कप न मदा गश्रुयुडा ॥ अथवा इ ग थ या का का अ (ग)
लोचनडा नापं च साडा दव तिके दव सं तुष्टुयु ॥ मन कामना सिद्धि शय
प्रसाद सायु ॥ ध्वजगन भिसी तव मिजन तव तिके वस्य शय ॥ ध्वजुल
खाया लु सिकायाडा चूर्ण थ हाडा लीख स रु हा थ थडा तु तिस हा सै बन दा
लु छिका ग हा य रु यिडा ॥ ध्वजगल या के पाल ध्वजगल या मिखाया
मि सा धल स वृ ल धव मि खा स उ ल स क सै ग थि ठ वा द्र स क्षि न
स पा र्ठ डा ने सम सु ख निडा ॥ ध्वजगल या द्वि पू डा (ग) लोचन डा उ

मि सम रागन छिडा डा (ग) स वि तिल डा हन पू छ मि द्रु तु स थ र्ठ श ता स
ध्वजमवन मरव निडा श सा स ग ॥ ध्वजगल या के पाल काया डा म कु या डा
डा हा रु दाय डा द्रु हा रु सि यु डा ॥ मनु ध्वजगनाम काया डा पू ग सै सि यु
ध्वजगल या पाप पु ति १ काया डा लीख स रु हा या डा चूर्ण थ हा डा सि इ ल ना
य ल स थ हा डा द य र्क त य द्रु तु स थ रु नू भवन मरव न के ॥ ध्वजगल
या स्व काया डा डा या हि पू ल डा ना प न के डा द्रु अ ल रु पू ख स रु ॥ ध्वज
गल या ला थ डा (ग) लोचन डा नि सै थ क न नि सै डा ने सर्व भो हि नी ॥

॥ वाङ्मयप्रसिद्धिः ॥ वाङ्मयप्रसिद्धिः ॥

[illegible]

(ॐ नमो भगवते वासुदेवाय) श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ दक्षिणावकविधिः ॥ शिव
 लंका लम्बा ॥ गण गुरु मूलनम स्कान प्राप्ता या मवतीति न्यास ॥ नृ
 त्य मन्त्र मूलन न्यास ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अ
 क्त हा पा ल खान गु गु ल (म धन) ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ तं ख
 न हा य ॥ अ व ३ ४ न (नि नी रु) ॥ त ल गु यदि ग्र धन (ध न म ३
 ० ॥ ति ॥ त त (म धन) ॥ यं १० नै १० वं १० ॥ तं कौ सौ ॐ कौ सौ ॥ ध
 १० ॥ नै स हा ॥ १० मं स हा १० ॥ कौ १० श्री १० (म १०) ॥ ॐ १० ॥

॥ इ नै (म धन) ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अ क्त हा पा ल खान गु गु ल (म धन) ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ तं ख
 प ड वा रु म म नु या म न ह न रं कुरु दं सु के ना ली दुं रु ॥
 १०६ ॥ पू न ४ द वि खा कं क (म धन उ धी) ॥ (म धन ह न मा पा
 र्व) ॥ (म धन या दा गुं गु ति ध न्न स न अ क्त न न च च क ॥ न ग ल
 थि या ड न थ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 अ क्त न ग उ न पू ज या य धा ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

हाय या

[illegible]

दासपाव

मासब्रुकसियादाकासासत्यथु कितकय विकनलरयधचक्रस
खिसति कि ति कि ननक धातधमकुनपूय॥ १॥ होयचाअ
या॥ लायक॥ कुनमावागोश्वनाय॥ गुरुंश्वनायनम॥ सिद्धि
रवीनहनुमककावावागुरुवजयागिनाकीवावाअनकसिद्धिवान
वीनमहाकुनीसर्वविष्णुनामयकानवीकाननामविनामपरुषक
आमानहार्करुत्थाहा॥ वासुगुलिपविंका॥ पूयवासुथूनि॥
विष्णुसि॥ सलवे॥ आल॥ कूट॥ थूनि समतागनादिहाअहंग

माहन

नाऊयागीस खियमसुयापुमानन ३ ति विने ३ ति ३ नय कङ्क ३१
ठाय नाडाया लाय के ॥ ल व नौ मूल नग न ऊ ल न सह च व य न ॥ त
साटा रित क क ला स व व षा ३ पि या रा य न ॥ म नु ॥ कौ स व ज न भ व ग मा
न य ला हा ॥ ध १ ॥ नँ उँ कौ नँ उँ जौ अँ कौ थँ जौ नौ कौ जौ कूँ दूँ ॥
ध १०००० जय या नाडा भव सु ॥ म ध न या स थ म त्रि य म व कि कं मा
हन ॥ अ ल ख ग न वा ना डा ॥ उँ नँ थ व मु न कि कं व स धा या डा ॥ का
पा य थं जय या नाडा ध १ ॥ म ध न या नाडा वि क व थ म हा व थ ॥ ह

व थ

माहन

उचाटन

नँ थ व मु ना ऊ य धा १०००० जय प धा १ म नु थ ॥ कौ सँ दूँ अँ जौ दूँ
सहन ह रूँ ॥ म व क स ग य य न उ चा ट न ॥ उँ कौ जौ जौ जौ जौ कौ रू
ला हा ॥ ध १००००० जय य द्रा पा या गु ल क ० ॥ या दि ध १ जय प म
व कि कं मा ह न ॥ उँ जौ जौ कौ जौ कौ रू ला हा ॥ ध १००००० जय म व
कि क व थ ॥ व मु द्रा पा या गु ॥ उँ उँ अँ जौ मा कौ उँ अँ रू ला हा
॥ व मु द्रा पा या गु नि म व या क स ग य उ चा ट न ॥ ध १०००००
म या य मा न म ना सि द या म न पा सा क वि य मा न म नु स ॥

व थ

उचाटन ३ म नु सि दि ०

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

पीठस्य लयं नृप

[illegible][illegible]

१२ पुनः शिक्कनं स्वाहा॥ धमलं खन हल डायक वा हय नि होय दह विषय॥
 ऊं नमः श्री चण्ड माह नोषणय॥ ॥ अथ माहिनी साधना विधिः
 चण्ड माहना विक्कपी ० स वाहान दय के पूजा डान मऊत ध्वं होत
 पर्थन धून के थन माह निरुय स लि डी स वा नूली स ग व स खा स च
 ला डी जनक यि ल द धू स सि नू डी चाया ॥ माह नि रुय डी
 न गी र्थ स डि ग य ॥ पूजा या य ॥ डी की मानि काये वि डरु वार्थ
 सि द्वाये धाम हि न नो सि दि य वा द या ॥ ३ ॥ धन नि रि ष्य
 चण्ड माह नोषणय माह नि साधन

वध माह नोषणय

समय नु र्प ड माह नी वि स ड न या डी ॥ धन या य म नु धा ॥ त्रै कं
 वी रूं वूं ॥ सर्व माह व धन माह नोषणय स्वाहा॥ माह नि च्छु कि ना स ख
 न ॥ ॥ ॐ अं कं वं टं पं यं ॥ स्वाहा॥ वध न ल ह न मा व क ॥ ना
 ल स थि मा डी खान प्र स्य तो ल वा ला डी नि डी ॥ धम ॥ ध नि गु लि
 म नु न ॥ ॥ १०८ अरु न माह नी न व ला डी माह नि नु रि य अरु न
 न हा स प क ति नि अ दि न प ला क च्छि यं ना न अ यं म रु स मा नि डी
 ॥ ॥ न मा व ड व नु म हा नोषणय स ह य र ड द य र म र्द य र अ स न कां
 प क ति ला य ॥

खैर शाक २ लाक व ४

कुरर साहा ॥ ध १ माह निज प्र पाडा त्रिय ता हागी स न ग त स हू उ स ग त य
त स वा थ स उ त ध स त य म व अ डा ना व नी त थ म ला क म व खं ला य म
रु ॥ उं वा न अ वा न अ मा ध व न द वि म ल ॥ व लु म हा ना ष ला य स
ब ला क व म क न र सा हा ॥ ध १ माह नी न कि के व ग थ ॥ द र्व व ग थ ॥ उं
व ड च लु म हा ना ष ला य ग र्हु २ भा ग आ न य २ अ मू क ष ला स
रुं रुं सा हा ॥ ध १ माह नि पा ल वि हा डा थ का ल स थू न म क न
म स ना स म डू मू लान वि ति त पा त डा न क म डि नि डा ॥ उं व लु

म क म डू के

न मा ४

म क वा रुं स म द ला क द य क

वा मू लु ध नी म म ग क न र मू य २ अ मू क स्य जी व व द द सा हा ॥ ध २ माह
नि डा स प म डू या क थू न म डू का क द य ॥ उं न मा व लु म हा ना ष ला य स म डू
न र मू य २ वा द न २ रुं २ सा हा ॥ ध १ माह अ रु न मा हि नि ज प्र प पा ल च म
का धा स त य स म क त य ना म ॥ उं रुं २ व ड च लु म हा ना ष ला य वि मू क व
वा य सा हा ॥ ध १ माह अ रु न ज प्र प कू य म डू या म मू ल ग य म श क ॥
उं रुं रुं व लु म हा ना ष ला य नां नां अ मू क मू ना य सा हा ॥ ध २
हा स व क मा ह नी ला ला डा ला हा ती स व र्ण राल न ला के ॥ उं रुं रुं

र य ना म ४

म क रुं रुं न ३

हा स न ला के १

दश्या १ नक्षत्र

रूपस्वरूपनञ्जलीकामाहकानर्कसर्वसन्मुखधवत्तनादिनिस्तर्वनक्तु
स्वाहा॥ ध्या१ माहन्त्यकगजप्रपङ्कसगयनका॥ ॐ निवजुमहाभाष
नविधि॥ ॐ हनसर्वमक्तु लोपनमक्तुना (ग) लो विना (ग) लो नक्तु (ग)
मयंकुत्थनमक्तुनक्तुविनामिनी खुं नामूधुये हं काटि २ मक्तुनरुत
दिग्गोपार्वतीका हं रुद्र स्वाहा॥ ध्या२ धमक्तुनल क्री लानरुत १ चर्क
या हाडा (ग) २१ अङ्गाडा वृत्ताडा गनडा जपपाडा पालविषडा गङ्गा
कृतनयडा या के सदका विद्या अस्ति ह्य ॐ हथ खम म ल क म ल म
म कथा विद्या अस्ति ह्य

रुद्रपातायगक्तु आवता निमात्रिता हानानसिंहवीनवायूनामसि
हवीनप्रवजुकीडा किल ४ डि सुनावेती स्रगागुलभा नानासि
हाय कपिलजगम अभाय वा वासुचक्राय महाउग्रचक्ररूपा
य ॐ ॐ २ कां २ कां २ ॐ रुद्र स्वाहा॥ ध्या १००८ क्रापाजपयाय मक्तु
द्वियाय यात॥ ध्या सायाडा याय स द्वाषधी॥ ॐ नभा आदिसगुगुका
ॐ कालि २ महाकालि वक्रकवती अन्दनकोता सिधनिममनम
वजावेतालिलिमा १० उग्रवचनवालि आदिकालि म्गनयूग कालि
स धर्मधी ३

मा १० जगत्तु वनानु का लि रं जी जाये प्र म कि आवे सा ग द्य मु रू (मान
 बना थ के मन रावे मडन मं डाव सक स कि ती नी बी ज अना मु न
 क नन के ज्ञाय वे म हं सा ग न ग म यी म हू ना जाम हू प्र जाम हू सक
 ल सै सा न मन मा स मु ग ल कि द लि जा हा सु म नू जा हा का लि व नि ॥
 धा १ ची थ ज प्र पा डी निय खान कृ य भ व हं त्रि क कि क चू के न सा ज
 प्र पा डी न के महा मा ह ॥ क्री का मे दे वा य न त्रि पा नि प्रि या य स्वा हा ॥
 धा १ हा ल मि मि नाल म खान न लि काल चि नि प्र वा धू नि
 महा मा ह २ का न पु व न ३ र्वे वं

ज प्र पं नय सिं ग म म्वा क पा सिं ग म्वा के ॥ हुं का नि वि का न न भ वि
 ना भ त्रु व ना ना मा नं हों हूं रु ट् स्वा हा ॥ धा १ ल ख नान के डी स म त्र त
 क ॥ हुं हुं न मन ज न म न सि त वा मा न न वि वा न लि त य री पा मा ह
 उ दि नि न त्रि रं ग नि ग म्भु त प य प नि व ति वि त य का ध न क न र ति
 प रं च क न न व थ सि पा न हे त न ज हा ज कि नी महा म वि य (श
 धा स प त्र अ रू आ हा ॥ धा १ ल ख ज प्र पा डी तो न के धा १ नू ग ल स
 पू य नू ग ल म हू ह या ला य के ॥ हि द यं ते न स्वा हा ॥ द ह वा ह ध
 नू म म्ही द या ९

प इहाय कें०

सर्वलि॥ मि॥ निस्तान ग्रन पूजा॥ निनस॥ ॐ वृं ग कि नै नमः॥
 थं का स॥ ॐ मूं ना कि नै नमः॥ नृगत स॥ ॐ वृं लूं ला कि नै नमः॥
 मः॥ ॐ हूं सूं ॥ ॐ कूं का कि नै नमः॥ लिठ स॥ ॐ ॐ सूं ला
 कि नै नमः॥ ज्ञाध वूं न स॥ ॐ हूं हा कि नै नमः॥ थूति वूं थ
 सज प्रय साक न धाय के प पूहा वूं य के॥ ॐ वृं हा हा जम
 कूं डारूं॥ सता सदाया डी पाल ३ धिय के॥ पूं दूं म लु धा
 ॐ हूं ज ज स खान जहा हा॥ इ वी नै॥ ॐ हूं नमोः॥

५ कुम्भ ४

ॐ सर्वं त्वेव लिखितं ॥ पद ॥ ॥ ॐ नमो किं निनाति हे मातृ कर्म ववव
दद अनियानमो त्रि कान्तु अभावन सफ पातात अनियमान
कवि अवकाशु अम् कान कादि अनज्मानमातिर अनज्गहनि अ
रुत्साहमासिद्धि उरपा ॥ धा ३ न नमो ससिद्धत नवला ॐ अरु निवि यमाधि
सक्त सक्त नम अमान ॥ ॐ कामा का काम रूपिणी याद पृथिवी न अमृत न
द सन्द अ वलि सनि सन ऊचि धन के भी अ धा या द पृथिवी न कनारि
न के न आपन कते क थिन क दि थि सने वाना ववयि ॥ अ वाना वडल

यविद्वषसाहा॥ ध॥ १ तवरवावासि. मि एकसि. निपसि स्वजं ३। तिहा
यक आहाडा जपपाडा पाल विहाडा वध्ययाय क्रया काध सन्य
थडा काधस. हा थ जा नि स्वसि रुतिव ध॥ १ जपपाडा थडा काधस
नयपुत्रषवध्य मिहारु लसा थडा पुत्रष लोहाडा पि वाहडा या या
क क्रया धस डायिडा॥ उं हू न ग रूल आ वयि घन कृतं घन आवयि
हं रू साहा॥ ध॥ ३ स्वयं कल न केव ध्या॥ ३ आ का ग्य ज ल म लु वि य धि
य मन क सु म न सु त ल मयि मान म्पात दि ग न वा नि ज कि नी वि रुपा
वध्य

ଜାତି ନିମାବଣ

कपतं न शक्ति नीन कु ग व म ता क नि अ मू कान द्या द मू द म ना क स क
वि नू पा ष न आ कू कि जि आ जी व प्रा ल ग्या मा सि डि उ र आ ग्य
॥ ध १ अ क न उ प्र पा अ हा त ज कि नी मा न ॥ ॐ काम नू द अ य
न चा वि ति मि ति नि र ह स ह नि र ह स ध नि ति च नि ज व का स पा न वि
थ नि च कें हो हा हा क चा न ल सा द न च वू हि ध क म यि ग यि पा स वू हे
आ च न पा स वू मा सि डि उ र पा ॥ ध २ अ क न न कू य क व च ॥ ॐ वा न
व सि अ ह न क धि य ना न नू सा म हा नू ॐ ग व न मे हा द व क वू प ता न
क व च २

मनका दिव्य प्रज्ञानवत् ॥ धा ३ इन्द्रको स्रजप्रप कूलवाग्व
 लह तयका पलन पूया अ वि हा अ न य जकिनी वैन ॥ इ हा मला
 न अर्क न हान मन्त्र म तया दि गु तान उ दया आ निवा ॥ धा १ अलुप
 व धा वीया हा कनूर लाल सवा ला ल ला हा न सव स हा त
 रं य डि अ अग्नि स्रहा इ मृद्वि सि द्वि क य ला द नि क थ म ति
 न प्र वं न यिया ॥ धा १ लय ज प्र प थ म ता न म क्रमा न य म प
 म क म सर्व सि द्वि य दा यि नि मा हा क व चा य नि द

म क म न य

क व व

सि मा श्रय

कं २ इन्द्रको स्रहा ॥ धा १ ति ति सि अं गु ति ज हा य क ज प्र प मा ल स न य
 क व व ॥ इ क क स न क थ र वि ग न न रु नि कं ३ ॥ धा ४ म म अ न
 ज प्र प प दि ग स हा त ना गी स हि मा श्रय ॥ ठ य म द के इ मा नू षा वि ग
 म य र मा न य र ध न य र च न य र २ क र त ल क न र स र इ पा न स्रहा ॥
 धा १ म नू षा का स अं गु ति ज हा य क न क य ख ल को स न य न ना न म न ॥
 धा म नू न उ ल म ग ल को स अं गु ति ख ल को स ग य मा न ॥ धा १ ॥ इं गु
 क ता हि उ न अ हा दे ह म नू उ क य म का ली म हा का ली ली म ना ला व द म ना
 न प उ म दि का पू डि ता य कं ३ ॥ धा १ म म न या वा न हा ल दे ह म नू ॥ इं

म क न ना न मा न ४

इं गु

अमानससमकुलशोकभयागतमिषू॥मूलनरुद॥ॐ निशकर्म॥
नमो गुरुपुत्रपुत्र॥गुरुपादनजो ध्यात्वा मन्त्रमर्चयद्विक्रम॥यानिनीमा
रुकां चैव वामपादपुत्रसुत॥त्रिगुरुपादुकाय शान्ते गन्धमपादुकाय शान्ते
वामपादुकाय शान्ते पाणिनीपादुकाय शान्ते मारुकाय शान्ते ॥ॐ
निममस्तु वामपादपुत्रः सनः॥गन्धमदीर्घपूजयित्वा पूजयितुं मुखे
रुत्वा॥यथास्तु मकुलशोकभयागतमन्त्रनिकायय॥इति दत्तमन्त्र
रुत्रमर्गवज्रपितृस्वामिनिधिधनय॥मन्त्राय ध्यात्वा॥आदीपागुपना
कु॥ॐ जाम्बिपुत्रं देवमहापागुपनास्तु यरुद॥१०८॥उत्तमस्तु॥
ॐ जाम्बिपुत्रं देवमहापागुपनास्तु यरुद॥१०८॥वक्रोक्तु॥उत्तमस्तु॥

स्वि सर्व इष्टा नीवा चै मूर्ख सं हय ति क्तां कीलय २ वृद्धि ना भय क्तां उं खात
॥१०५॥ सुदर्शन मु ॥ उं सहे आन हं रुट ॥१०६॥ विष्णु वा मु ॥ उं सुदर्शन
महा स्व क ना ऊ हं द ह २ सर्व इष्ट हयं क्ते २ हं रुट वि श्वि २ हं रुट वि दाय
य २ हं रुट प न भ मु न ग स २ हं रुट ह क य २ हं रुट ग स य २ हं रुट व क
प न म ॥१०७॥ आ (ग्या) मु ॥ उं नूं आं नूं वा रु ति श्वो नो हि २ म ऊ द ह २ ए स
२ आं नूं नूं हं रुट ॥१०८॥ सदा मि वा मु ॥ उं स द द व ना म य ल क्ता द गु व
क्ता विष्णु उ पू गाय क्तां क्तां क्तां क्तां मि वा मु य हं रुट न म ॥१०९॥
वी न ह डा मु ॥ उं क्ता न मा ह ग व न वी न ह य य द क प जा पे ति मि न (पु द
ना य नी ला च द प ह य स प्य मा हा ह वि न वि रु ति रु ष म य पू म न न य

[illegible]

जीर्वनरुद्र ॐ ॐ स्वाहा ॥ १०८ ॥ अथावा मुनिमिखावन्धनं दूर्या ॥ ॐ ॐ
 जांजीं हूं ॐ पुष्टुन २ धाव २ तन २ नन २ रूप २ वट २ प्रवट २ क ह २ वम
 २ धम २ धातय २ विधातय २ विधि २ हूं २ हट ॐ श्री महाकीमा वि का वि बु स्वा
 हा ॥ ॐ स्वात्मन का ॥ ॥ ततावीनादनमकुं भहू मो वि लिख नम कु यथा ॥ हूं २ ॐ २
 का लिके धाव दं पु पु व (पु व पु ना यिके दान वा न्दा न यह न २ भव मनी प्र महा वि
 धी हूं द य २ स्वाहा हूं हट ॥ ॥ ततः पी ० म ध्व पू ष्या जि सि उ यं दि य ॥ म को य थ
 वी न त ॐ ॥ य वा य सी ह्नि ना द वा ना क सा धृ ह यान का ॥ पि भ वाः सिद्ध य का धृ
 न न्ध र्वा प्र न हा ग ॥ यानि न्या मा न ना रु गः सु र्वा भू ख व न्मियः ॥ सिद्धि दा स्ता
 त वं पु तु त थ च म म न क काः ॥ ॥ ॐ ॥ तता व लि म दानं ॥ ॐ ॐ ना धि प ति

पञ्च हे न वं का ल का ल हे न वं ॥ महा का लं य ॐ घ ला त्पू र्वा दि क व तु सु य ॥ ॥
 स फ लो गं व लिं क्त्वा च तु दि हूं व तु ना व लिं म (ध्व उ यं क्त्वा अ र्च पा उ स हि
 त अ र्द्धा त्म म नी न पु दि मी न मू ढ या पू क व लिं व ह्म प यि त्वा ॥ ॥ स्व क ला
 क वि धि ना रि न म स्का न पा ल या म मृ ष्या दि क न य उ न न्या सा दि न्या स व
 क्त्वा ॐ सा र्ध पा उं व पू ॐ यि त्वा ह न पु ष्या त्म पू जा नं दूर्या ॥ ॥ ततः पू
 र्वा दि नि वि न्द्रि का ल वृ क्त्वा च तु न्म वि लिख्य पू ज य ॥ ॐ म गु ला य न
 म ॥ ॐ ति पू ज यि त्वा व लिं क्त्वा प थ रु थि व स र्वा दि नि दूर्या ॥ ॥ ततः
 वा ह नं ॥ ॐ हूं ॐ ॐ ना प त ॐ हा ग क्त्वा २ ॐ ह ति ह्म २ ॐ ह स त्रि हि ता त व
 २ ॐ ह स त्रि हि ता त व २ म म पू र्वा गृ हा ल स्वा हा ॥ हूं ॐ ॐ ना धि प त य च

गत्याद्यैरं० यदि पूनना वमनार्क॥ वसि॥ ॐ हूं ममना विपतयं ॐ म
 सामिषान्न वेसिं गृह्ण २ गृह्णापय २ विष्णु निवानर्कं कुरु २ सिद्धिं प्रपु यं कुरु
 स्वाहा॥ हूं एव वसि ममना विपतयं नमः॥ प्रथमं॥ कुरुपालाय॥ ॐ कां
 कां हूं कुरु कुरुपालाय ॐ हे वल्कलाना विपतयं यथानाम् प्रमृगमं गुह्यम
 ॥ ध्वं भूवतनश्चतुर्भुजाय त्रिभुजाकाय खट्वकखट्वपाभयं कपालमाला
 त्रयं भयं विष्णुकाटिस्तमप्रताय ॥ अहिरण्यवन्तं नवतुर्यं भयं यथैव
 नीलं वसिं गृह्ण मम विष्णुदयं २ गुरु २ मुरु २ सुरु २ खोहि २ महाका
 मना विपतयं कुरु मम वनदाममम सुवर्णं धनं धन्या सारं दहि सर्वं
 सिद्धिं प्रपु यं कुरु स्वाहा॥ कां एव वसि कुरुपालाय नमः॥ दधु मृदया प्रथ
 मं २ मम

म॥ ॥ ततः दक्षिणं जलार्घ्यपाठगृहीत्वा पूर्ववद्वसि मं कुरु पयित्वा
 आवाहय॥ ॐ जो हे नवरयानक ॐ हा ग हूं यदि पूनना वमनार्क॥
 वसि मं कुरु॥ ॐ जो हे नवरयानकाय ॐ म सामिषान्न वेसि मिषादि पूर्व
 वत्॥ वदुकाय॥ ॐ देवी पूजवदु कनाथमहाकपिलजगत्तानराहनवि
 नेत्रदा सामुख भूवतनश्च ॥ अहिरण्यवन्तं मगुह्यमं ॥ ध्वयं ॥ ध्वपनीलं व
 सिं गृह्ण २ वां च्छिगाथं ददस्व मं हूं रुद्र स्वाहा॥ ॐ श्रीं जो वां एव वसि वदु
 कनाथाय नमः॥ ततः ऊनी मृदया प्रथमं॥ ॥ ततः पश्चिमं जलार्घ्य
 पाठगृहीत्वा पूर्ववद्वसि मं कुरु पयित्वा वाहय॥ हूं जो महाका

नमो हाग हं षादि पून नाव मनानं ॥ वसिम कु ॥ हूं जी महाका लाय हूं मंसा
मिधान्न वसिमि षादि पूर्व वत् ॥ गणपतये ॥ ॐ श्री जी ह्रीं क्लीं नमः
पतये वनवनद सर्वजन भव गमानय स्वाहा ॥ ॐ गं गं गूं नै नै नै ॥
प्रवयति प्रगपतये नमः ॥ गजमूडया प्रगमः ॥ ॥ नमो रुने जलार्चपा
रं गृहीत्वा पूर्व वदुति मे कं स्थापयित्वा वाहये ॥ ॐ हूं कात्त रे नव ॐ हाग
हं षादि पून नाव मनानं ॥ वसिम कु ॥ ॐ हूं कात्त रे नवाय हूं मंसा मिषा
न्नयसिमि षादि पूर्व वत् ॥ शानिनी ॥ ॐ य क चि शानिनी नी पी ० जायाग जा
रुत जा कू स जा स दा ह जा य क चि शानिनी नी ख व नी ह व नी भ व नी
य क चि शानिनी नी ए का रु नी द्य रु नी य रु नी व रुः पे व व दू स पा

छनवाक्रीर्णीशि जगदासिनीनायक्यपनीतवर्तिगृक्रममसिद्धि
 कूर्ध्वं कुं ३ रुद्रवाहा एववतिर्धानिनीनानमः॥ यानिमूय योय नमः॥
 तत्रविताम ॥ पूर्ववदावाहनं ॥ क्रीं कासनाति ॥ हागकुयादिपूर्ववत्पून
 नाचमनीत कूर्ध्वं ॥ वतिमकु ॥ क्रीं कासनाति मेहनाति कासिकद्योव
 निम्बन ॥ गृहानमं वा तं मातर्दहिमसिद्धिगुरुमं ॥ क्रीं कासनाति ॥ मं
 सामिषान्नयोदि ॥ प्रलम ॥ ॥ गदं कूर्ध्ववदावाहनं ॥ कृंतुन नो ॥
 ॥ हागकुयादिपूननाचमनं ॥ वतिमकु ॥ कृंतुन नाथय ॥ मं सामिषा
 म्रयादिपूर्ववत् ॥ प्रलम ॥ ॥ गदाम पूर्ववदावाहनं ॥ कृंतुन सर्वग ॥
 धिपतं ॥ हागकुयादिपूननाचमनं ॥ वतिमकु ॥ कृंतुन सर्वग ॥ धि

पतयधुर्मसामिषा न च हिं ॥ १ ॥ अदि पूर्व वत् ॥ २ ॥ तिव लि धा न विधि ॥
 ॥ अथ हि पं व ग य न उा कृ यि सा पी ग व सु मे र्से वे शु मू स न म र्ग वा द
 म वा उ प ॥ ॥ ग ग र ह र्य प उ वा उ ट प उ वा पी ० म क र्क रू मा दि ना
 वि सि र्व पी ० न्य स ॥ ॥ पी ० मा स्ती य लि सि ने व डु वी ना स न हि ग ॥
 म म ना स न वा न वा स न वा वी ना स न वा पृ रि का स न वा व तो स वि
 स य नि वा डि न म्वा वा सा डि न वा कृ क्ता पु न्ना अ उ वा स न न्य स
 ॥ वी ना र्द न न म न्ना न का दि कृ प्र क स य ॥ म न्ना य थ ॥ ॐ हं हं हं
 जी को लि के धा न द ॥ प्र न ॥ व सु ना यि के दा न वा न्ना न य ह न ह न म

तन्मन्त्राः तेषां ध्यानविधौ पत्रिहृत्यमा २

व म नी य म हा वि धौ हं द य कृ द य स्वा हा हं हं हं ॥ अ न न म न्ना य
 अ न म न्ना य त्वा हं न वा दि कृ प्र क स य ॥ ॥ सा ध क र्क त य मा प्रा
 ति दी प पु वा स्तु तः र व न ॥ नि गी ठ सि ग मा र्ज स मू लि का ग र्
 वृ त्ति का ॥ ॥ ॥ स्व क स्या क ष्ट या दि क न ष उ ग न्ना र्ज ह
 वा स व द व नी स पू ज वि ॥ ॥ ॥ न का सी पू ज य थ ॥ ॥ न्ना
 दो ष्ट या दि न्ना र्ज य थ ॥ ॥ ॥ न का सी म न्ना य ॥ ॥ नि न सि

३ अंश ॥

हं मन्त्रि न हा दी प वि धौ पत्रि हृत्यमा ३

एतुष्टु वयं नमः॥ मुख॥ विनाट्टु नमः॥ हृदि॥ भगवान्काशी द
 वगयेनमः॥ गुह्य॥ जंवीजायनमः॥ डो भक्त्यनमः॥ डी कीनकाय
 नमः॥ विष्णु ति॥ ममारीष्ट सिद्धि (थ) अपविनि यागः॥ कनामन्या
 सीकर्या॥ जं डी डी अष्टुष्टा र्थानमः॥ कालिकतर्जनी र्था स्थाहा
 डी डी डी जं मध्मा र्था विषया जं डी डी अनामिका र्था हि॥ कालि
 क कनिष्ठा र्था वोषट्॥ डी डी डी जं कनक सप्त र्था अस्त्राय रुद्र॥ ७

वीरदयादि॥ पी० पूजा॥ जं भगवान्नायपा पूजा॥ ध्यान॥ जं अजना
 डिनिल नंदो भगवान्नायवा सिनी॥ प्रियं गी मुक्क कं गी डू गुह्य मो सा
 तिरीषधी॥ पिंग की वामह सेन मघ पूरु क पालिकी॥ सद्यः कृतः
 निनाद करु सेन दध निमि वी॥ स्मिग व कु सदा वाम मी स च व भगव
 ती॥ नाना र्थ कान ह वागीन भ म की सदा भवे॥ ध्यान पूर्व नमः॥
 आवाहना दि पून न च म नीर्ग॥ यं डालि॥ जं डी डी डी कालिक डी डी
 अं श्री ३ फाल की ति वं जू की र भ दु ति दु वा॥ धाल ७ जे काल पा जू वं त पु १ र्वा था ध्या मे

२६५ हुं स्विता ज्ञो भो रज्ज्मा क र्त्तुं यि हिंसा हो ॥ ६॥ १०००००

सा देन ला ला या न ल त य मिनी
 पि का क म ल

ओं वै स्वाहा श्री गं गं न का सिका दवी पापू ॥ ३ ॥ नृव वलि ॥ यानि मद्रा
 क्री का सिका यि २ ॥ ३ ॥ पनिवान ॥ मृष्ट पयं बुद्धा ग्म दि ६ ॥ तपू नं जूहि
 तां गम दि ६ ॥ धात्रं ६० न्या दि १० ॥ तद्वि वजा दि १० ॥ नृव वलि ॥ ॥ गं गं
 न नृव पूजय ॥ ६ ॥ गं गं न ना स नाय नमः ॥ ॥ का ठिका
 लान जा रा स च तु तु जी रि सा च न ॥ गं गं न ना हू कम ध्व र्क मू गु हू क
 वि रू वि ती ॥ पंच प्र त हि र्द व रि रू सी उ म नू क था ॥ र व प्र च ख प न

वे व वाम दक्षिण या ग ॥ ३ ॥ विजृं सुन्द न द हं गं गं न र स्म रू वि ती ॥ नाना
 भवे ॥ क्रीं मानं का सिका द द य हि र्द ॥ त लो य न न ता स के धा न चू म्ब न
 त स नी ॥ गृष्ट (गं मा यु सी यु की रू न वी गं सी यु ती ॥ ज दा प ट ल (गं रो छी
 स व स चा स य हि र्द ॥ स व स न य मू गु रू वी प्र स न व द नं गि वी ॥ ध्व न
 पू र्ण २ ॥ पा घा दि र्द ज लि ॥ हूं हूं महा का ल प्र सी द प्र सी द जी जी स्वा हा
 ३ ॥ अ न न व लि र व म मू डा ॥ सु जी धां हूं सी जां जी हूं हूं हूं हूं हूं

अथ नियमादिरथा समस्तपञ्चसिद्धिर्वा॥३॥

ॐ नमः शिवाय ॥ नवाय स्वाहा ॥ ३ ॥ भू न न व सि ॥ प नि वान ॥ ह रु का
दि १ ॥ ॥ व लि दाने नि य व रु वा ॥ णि न सि गु र्ध्व आ द्य दि द र्वा ध्व
वा ऊ र्ध्व क र्ण ॥ ॥ ग म ङ्ग ना लि प र्थ नै य दि कि वि न्न त दि ग ॥ अ य
इ र्ग म नू मा र्ग ग नै व स र्ग पान दि प ॥ म नू य म ॥ ३ ॥ २ न दि सि
स्वा हा ॥ ३ ॥ ति सा सि सा म दे व र्ग ॥ ४ ॥ म व रु फि का न क ॥ ५ ॥ वि रु र्ध्व म र्ग
दा ता च म र्ग ना म व स रु ॥ ६ ॥ प्र त पि म चाने वि प्र म र्ग ना का

नक४॥ वृंतिदिग्गानि सानात्मचतुर्लिंगविद्यदिता॥ ततः४ सकपद
गत्वा पूनस्तयेव संवित्॥ दक्षतगापिसंपूज्य प्रअपे नम्रमूर्कुर्म॥
निर्लेयः प्रअपेद्यात्र सिद्धिवाक्कलहतेनन४॥ ततः४ सर्यवान् यिवा
वनयेन मूर्कुर्म॥ यदावलिप्रार्थयामि क्रीडनीनभवेवो॥ दिनान्त
भवदास्यामि श्रीकृत्यसुष्टईवज्ज॥ पत्रं द्वित्वगगादद्यात्पिष्ठेन
ननर्कजनान्॥ पिष्ठमेतियवाहुवनध्यानाहुवनं यर्थः॥ ॥ गङ्क

तनुनात्र॥यवक्षदमयीवाभलिखादमयीतथा॥चन्द्रहासनविधिवत्कुरु
नमस्तुभवागत्य॥चन्द्रहासाद्वचन्द्राकृतिखण्ड॥नीलनक्तुपि॥जपादीचव
लिदद्यात्सुभदपिवलिहन्॥जपानाअपम॥ध्वजदहिदहीनिगावय
आतदापिचवलिदद्यात्सिंहिष्यकृगरीचवा॥नदिश्वीकृर्गर्गिचित्रच
वन्द्यसमागम॥जनादिशर्मासर्पाभगजानीदक्षिभनथा॥पक्षिकाट
पिभवानीयद्वद्वामनसिद्धिर्ग॥तत्सर्वस्वप्रसहर्गित्यसर्वस्ववर्ज्य
॥गणाद्वद्वदीनितयानिगुक्तावर्नप्रार्थयित्वावलिदानेसमाप्या॥

न्यासाभ्युपवसिर्विस्तृतवतायास्तानमागस्यदक्षिर्भदद्यात्॥
समाप्यसाधनीदविदक्षिर्भविहवावधि॥गुनवैगुपूपायतत्य
ल्येवाप्रदापय॥सम्यक्सिद्धिकमनुस्यनासाध्वविद्यमक्कचिन्तावद्
मनुवतःपूसःकाकधामिवजवस॥॥तितपी०दव्यगुतप्यर्षी॥
स्यगृहगत्यायधस्रखीविनह॥श्रीगर्गानिगच्छ॥जर्वकृगमनुसि
द्धिरुवति॥॥अपनियम॥जकाद्वनीयदिरुवद्विक्कसहस्रनगजय
द्यद्वनचाद्वसहस्रगद्वनचायूगार्द्वकी॥श्रुतपननुमनुक्कगजोक्क

॥ याय दी चीत ॥
॥ उचु न म सु ते ॥
॥ ग्यादि ॥

ॐ ह्रीं क्लीं ॥ अथ नाष्ट पाशु पता ॥ चक्रनादि ॥
मूलाय धूपं धूपयित्वा गंधं चन्दनादिना भवप्रतिपादं वस्त्रकटिदं धु
त्वा पूजां कर्तव्यं नय ॥ नक्तं कायदिति सुचरुं कथं कृतं साधनं ॥ ततः
कृष्णं भग्या मूपं कृत्वा पूर्वमिन्द्रं कृत्वा भवस्त्रपय ॥ एतां सर्वं गवा
पूजं जाती खदिन अर्द्धं कर्त्ता मूर्त्तं तन्मुखं दत्वा भवकुर्यादि धाम्
स्वी ॥ ततः भवस्य वाङ्मूलादिकं यन्त्रं च गुणं तन्मुखं धाम् दत्तं
तन्मुखं कर्त्तव्यं तन्मुखं धाम् कर्त्तव्यं पीठं मूर्त्तं च गुणं नयूकं चन्द
नं न विसिखा तद्वप निश्चयं मर्त्तं कर्त्तव्यं चान्यं ॥ यद्यप

॥ उचु न म सु ते ॥
॥ ग्यादि ॥
॥ उचु न म सु ते ॥
॥ ग्यादि ॥

पूजा गवापमकाष्ठं वा ॥ एकस्मिन् राजननिधाय वसिष्ठं कर्त्तव्यं ॥ गुणं नमस्का नादि आत्मपूजां ॥ कीलक निर्मलं कर्त्तव्यं
जावयं कथं दद्यानि स्त्रीवर्नं भव ॥ पुनः प्रकाशं न कर्त्तव्यं जपं कर्त्तव्यं समान
य ॥ ततः दद्यादं भगुलं मा मयं कर्त्तव्यं दद्यादि कर्त्तव्यं ॥ ॐ ह्रीं क्लीं ॥
दिदवता नू सामिषान्नं न पूजय ॥ ॥ ॐ ह्रीं क्लीं ॥ द्याय ह्नाधिपतय
वज्रह्माय ज्ञावता सनाय भक्ति पार्षदाय नमः ॥ ॐ ह्रीं क्लीं ॥ द्याय ह्नाधिपतय
दद्या ॥ ॐ ह्रीं क्लीं ॥ द्याय ह्नाधिपतय सामिषान्नं वसिष्ठं कर्त्तव्यं ॥ ॐ ह्रीं क्लीं ॥
विष्णुमिवानं कर्त्तव्यं सिद्धिं मयं कर्त्तव्यं ॥ ॐ ह्रीं क्लीं ॥ द्याय ह्नाधिपतय
ॐ नमः ॥ ॐ ह्रीं क्लीं ॥ द्याय ह्नाधिपतय सामिषान्नं वसिष्ठं कर्त्तव्यं ॥ ॐ ह्रीं क्लीं ॥

॥ उचु न म सु ते ॥
॥ ग्यादि ॥
॥ उचु न म सु ते ॥
॥ ग्यादि ॥

मूंय माय पुता धिपत यम हिया सुनाय दधु ह्माय यादि प्राप्ता ॥
नेमृत्वाय यादि ॥ वूंवनूभयः मूंवायवः मूंक्वनायः हूंक्षीभना
यः अूंभूधसः उंउडोय ॥ पूनर्व हिय यदका ॥ चण्डपठिया
गिनीय ॥ १॥ जाकिया दिष ॥ २॥ स्मना धिपतय ॥ ३॥ ॥ तत्
पूजा पकन न समीप निधाय हूंउरु न साधक स्थाप्य ॥ उंउरु
ट्ठवा सनाय नमः ॥ हूंपुत्यत्वा ॥ मूंसा न जांरु ठि यूर्ध्वन न अूं

आवाह न कुमभ गवापर्युपविध्य गवकभ न प्रसाद्य ह्मादि काव
धूंन क हूंउरु मूंसा न वेद्या ॥ गणपुत्र मूंसा न देवता नमस्कृत्य
यामादि स्तवक त्याक न्यासी ह्मावा नाद न न सा न्नि क्रिया ॥ सैव
त्य ॥ अूंमूंन कुसा मूंक स रथा का हूंन त्य सिद्धि प्राप्ति वं धका ॥
षड्विंशतित निवृत्ति पूर्वक सिद्धि का मूंवी न सा धन कर्म ह्मा
निधाय ॥ हूंति सैव त्य ॥ जींश्रुध न ग किं क म ह्मासाय ॥ १॥ हूं

स्यासुनैसीपूछ ॥ भवहूटिकाया दवीमावाच पूऊय ॥ पा ॥
यामपूवकन्यासं कलापान्न श्राव्या निदिप्या ॥ भवाइह्ययसं मू
खगत्वाप ॥ ७७ ॥ हुं व ॥ भ म ह व द व ॥ भ म मा मू क म नु सिद्धि द
हिमहाला ग क ना गुं म प द वि न ह न ॥ ७८ ॥ ॐ न न न मू स म नु
प ॥ न ॥ भ व पा द द य प ह स्तु ये भ व धी या ॥ त न ॥ भ व पा द न स सि
ह न ॥ भ विका भ य की ति ख द न न ॥ हुं ही म स्त्री नू र या हा व हा य हा

च न रा वू क ॥ ग हि मी द व द व ॥ भ व ना ना म धि पा धि प ॥ पू न ॥ भ वी
प र्थ वि भू त स्य वा हू पा र्थ या ॥ नि ॥ भ मा र्थ हू स्या कू भ मा ली र्थ य
स्व पा दी नि ध य ॥ भ व पा नि रि को र्थ वि लि र वा त न्म ॥ ७९ ॥ जी वी
उ मा ति स्य भ व स्य पा ॥ प ति सी कू र्थ या ॥ ८० ॥ जी क भ व स्य पा
॥ ८१ ॥ ॐ ॥ ८२ ॥ ॐ ॥ त न्म भ व हू टिका या स क स्या क धा रा न्या सा दि
द वी सी पू स्य य ॥ भ क प का न भ व सि द ला ॥ भ व मू ख मू

लदवीसंगर्ष ॥ अथोसपूटीमोनीरुत्वाजप ॥ यदिगवच
 लमि ॥ अथासनाहुर्यनासीतिवद ॥ ॥ यदिवर्तिपाथयति
 ॥ यत्पार्थयसिवीनमदागवीकूजनादिक ॥ दिनकनचदा
 म्यामिस्वनामकथयस्वम ॥ ४४ ॥ अथसंस्तुतेनैवनिर्हयस्तु
 पुनर्जप ॥ ॥ यदानामेकथयतिगदासगीतुकांनय ॥
 यदिनामनवदतिवनवानप्रयच्छति ॥ तदापुनर्जपइमी

शिवहृदिकीभावय ॥ शिवस्यपादवन्दनभावयित्वाशिवपादतस्तुत्यनुमाकुंथ ॥
 यावन्नामनकथयति ॥ जपसमर्प ॥ ५५ ॥ अथ ॥ पशुतर्प
 ॥ दवगर्प ॥ ॥ अथसमर्पदत्वा न्यासास्तुगवसि
 विसर्जनीकीलकविसर्जनी अचमामूर्यसाक्षी ॥ कीलक
 दिसर्जसामग्रीनर्घाप्रवाहय ॥ गवजसंवागर्ज्वानि ४ क्षिप
 ॥ ॥ अथास्त्रशृङ्खल ॥ ॥ ततापत्रहनियद्वसिपाथित

